# जैन बालपोथी

श्री महावीर भगवान

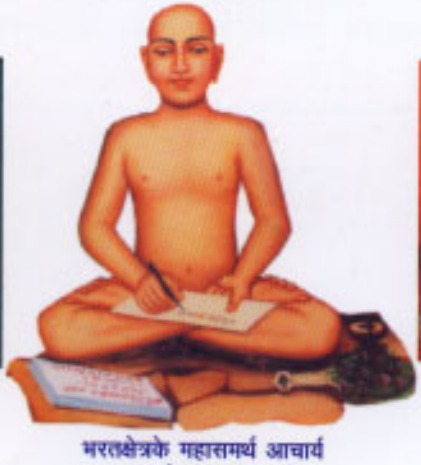

भरतक्षेत्रके महासमर्थ आचार्य
भगवान श्री कुंदकुंदाचार्यदेव

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-364250

कुल दस आवृत्ति प्रत : ५८०००
ग्यारहवीं आवृत्ति प्रत : ३०००

वीर नि.सं. २५३६ वि.सं. २०६६ ई.स. २००९

जैन बालपोथी भाग-1 (हिन्दी)के

## * स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता *

एक मुमुक्षु, चेन्नई

हस्ते सी. एस. भंडारी

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. १०.००=०० है। मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. ८=०० होती है। तथा श्री कुंदकुंद-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट हस्ते स्व. शांतिलाल रतिलाल शाहकी ओरसे ५०% आर्थिक सहयोग प्राप्त होनेसे यह शास्त्रका विक्रय-मूल्य रु. ४=०० रखा गया है।

किंमत रु. 4 =00

मुद्रक :
ज्ञानचंद जैन
कहान मुद्रणालय, सोनगढ़–364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

# अनुक्रमणिका


| पाठ | विषय | पाठ | विषय |
|---|---|---|---|
| १. | जीव | १५. | सम्यक्चारित्र |
| २. | शरीर | १६. | जैन |
| ३. | जीव और अजीव | १७. | राजाकी कहानी |
| ४. | द्रव्य-गुण-पर्याय | १८. | मुक्त औस संसारी |
| ५. | परीक्षा | १९. | जीव और कर्म |
| ६. | हाँ और ना | २०. | श्री महावीर भगवान |
| ७. | धर्म | २१. | इतना करना |
| ८. | समझ | २२. | अच्छी अच्छी शिक्षायें |
| ९. | भगवान | २३. | कभी नहीं |
| १०. | गुरु | २४. | धुन |
| ११. | शास्त्र | २५. | वन्दन |
| १२. | जैन बालकका हालरिया | २६. | आत्मदेव |
| १३. | सम्यग्दर्शन | २७. | मुझे बताओ |
| १४. | सम्यग्ज्ञान | २८. | मेरी भावना |

# प्रकाशकीय निवेदन

आठ-दस वर्षके बालक भी रुचिपूर्वक तत्त्वज्ञानका अभ्यास कर सकें इस हेतुसे यह 'जैन बालपोथी' तैयार की गई है। बालकोंका अभ्यास करनेमें मन लगे ऐसे ढंगसे इसमें छोटे-छोटे पाठों द्वारा निम्नलिखित विषयोंका संकलन किया गया है—

जीव-अजीव, द्रव्य-गुण-पर्याय, धर्म, देव-गुरु-शास्त्र, पंच परमेष्ठी, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, शिकार-त्याग, जैनधर्म, मुक्त और संसारी, जीव और कर्म, भगवान महावीरका जीवनचरित्र, देवदर्शन, हिंसादि पापोंके त्यागका उपदेश, क्रोधादिके त्यागका उपदेश, कीर्तन-संचय, देव-गुरु-शास्त्रको वन्दन, आत्मदेवका वर्णन और वैराग्य-भावनायें आदि।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक पाठमें विषयके अनुसार चित्र भी दिये हैं। ध्यान रहे कि—यह चित्र केवल दृष्टान्तरूप हैं, बालकोंको पाठका अभ्यास करनेमें सुगमता हो और उनका मन लगे—इसलिए यह चित्र दिये गये हैं।

इस बालपोथीके पाठ बालकोंको केवल कंठस्थ करानेके लिये ही नहीं हैं, किन्तु बालकोंको प्रत्येक पाठका भाव समझाकर उसका अभ्यास कराना चाहिए और चित्रोंके द्वारा विस्तारपूर्वक समझाना चाहिये। कीर्तन, देवदर्शन आदि पाठोंको वाजिंत्रके साथ क्रियात्मक रूपमें सिखाना चाहिये।

यदि प्रत्येक माता अपने बच्चेको वीरप्रभुकी संतान बनानेके लिये झूलेमें ही उसके कानोंमें इन वीर-मन्त्रोंको सुनाये और दूधके घूँटके साथ-साथ तत्त्वप्रेमका घूँट भी पिलाये तो बालकको प्रारम्भसे ही धर्म-रसका स्वाद आने लगे और उसका जीवन धर्ममय बन जाये। यदि एक बार बालक इस तत्त्वज्ञानमें रस लेने लग जावेगा, तो फिर जैसे उससे

खाये बिना नहीं रहा जाता वैसे ही धर्म-रसके बिना चैन नहीं पड़ेगा और वह अपने आप रुचिपूर्वक उसका अभ्यास करने लगेगा।

अतः सभी जैन बालकोंको इस बालपोथीका अभ्यास अवश्य करना चाहिये।

यह बालपोथी, जैनसमाजमें सर्वत्र इतनी अधिक प्रचलित है कि हिन्दी-गुजराती-मराठी-कन्नड-अंग्रेजी ऐसी पाँच भाषामें इसकी कुल ३० आवृत्तियोंके द्वारा १,५६००० प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जो कि हमारे जैनसाहित्यके लिये गौरवकी बात है। इसके हर्षोपलक्षमें, श्री अखिल भारत दि. जैन मुमुक्षु महामण्डलके अध्यक्ष महोदय श्री नवनीतलाल सी. झवेरीकी ओरसे लेखको सुवर्णपदकसे पुरस्कृत किया गया है।

जैन बालपोथीका द्वितीय भाग भी प्रकाशित हो चुका है।

प्रसन्नता है कि जैनबालपोथीको समस्त जैनसमाजने अपनाई है। ऐसे छोटे छोटे साहित्यके द्वारा बालकोंको जैनधर्मका संस्कार देनेकी बहुत आवश्यक्ता है।

**जैनं जयतु शासनम्।**

वीर निर्वाण सं. २५१९
दीपोत्सव

साहित्यप्रकाशनसमिति
**श्री दि0 जैन स्वा0 मं0 ट्रस्ट,**
**सोनगढ़**

# बालकों से

धर्मप्रेमी बालको !

तुम वीर प्रभु की संतान हो।

तुम्हारे हाथों में यह बालपोथी देखकर

किसको आनन्द नहीं होगा ?

तुम इसे प्रेम से पढ़ना।

पढ़ने के लिए हमेशा पाठशाला जाना और

आत्मा को समझकर तुम भी भगवान बनना।

# वीर प्रभुकी हम संतान

वीर प्रभु की हम संतान ।
धारें जिन-सिद्धान्त महान ।
समझें पढ़ने में कल्यान ।
गावें गुरुवरका गुणगान ॥ वीर० ॥

पढ़कर बनें वीर विद्वान,
पावे निश्चय आतम-ज्ञान ।
गुरु उपकार हृदयमें आन,
उनको नमें सहित सम्मान ॥ वीर० ॥

# १. जीव

मैं जीव हूँ।

मुझ में ज्ञान है।

मैं ज्ञान से जानता हूँ।

*

## २. शरीर

शरीर अजीव है।

उस में ज्ञान नहीं है।

वह कुछ जानता नहीं है।

*

# ३. जीव और अजीव

मैं जीव हूँ। शरीर अजीव है।

जीव में ज्ञान है। अजीव में ज्ञान नहीं है।

मुझ में ज्ञान है। शरीर में ज्ञान नहीं है।

मैं अपने ज्ञान से सबको जानता हूँ।

शरीर किसी को नहीं जानता।

जीव और शरीर अलग अलग हैं।

*

# ४. द्रव्य-गुण-पर्याय

मैं जीव-द्रव्य हूँ।

ज्ञान मेरा गुण है।

जानना मेरी पर्याय है।

जीव-द्रव्य में ज्ञान-गुण है।

अजीव-द्रव्य में ज्ञान-गुण नहीं है।

जीव-द्रव्य जानता है।

अजीव-द्रव्य नहीं जानता।

*

# ५. परीक्षा

बालको !

बताओ तुम कौन हो ?—जीव जीव जीव।

तुम्हारे में क्या है ?—ज्ञान ज्ञान ज्ञान।

तुम क्या करते हो ?—जानते हैं जानते हैं जानते हैं।

शरीर कौन है ?—अजीव अजीव अजीव।

क्या उसमें ज्ञान है ?—ना ना ना।

क्या वह किसीको जानता है ?—ना ना ना।

क्या शरीर तुम्हारा है ?—ना ना ना।

क्या शरीर का काम तुम करते हो ?—ना ना ना।

*

# ६. हाँ और ना

बताओ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तुम | जीव | हो ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| शरीर | जीव | है ? | —ना | ना ना। |
| तुम्हारे | में ज्ञान | है ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| शरीर | में ज्ञान | है ? | —ना | ना ना। |
| तुम | सबको जानते | हो ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| शरीर | कुछ जानता | है ? | —ना | ना ना। |
| तुम | शरीरको जानते | हो ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| तुम | शरीरका काम करते | हो ? | —ना | ना ना। |
| तुम्हें | सुखी होना | है ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| तुम्हें | दुःखी होना | है ? | —ना | ना ना। |
| तुम | आत्माको पहिचानोगे | ? | —हाँ | हाँ हाँ। |
| तुम | अज्ञानी रहोगे | ? | —ना | ना ना। |

# ૭. धर्म

मुझे सुखी होना है।

जो धर्म करता है वह सुखी होता है।

जो धर्म नहीं करता वह दुःखी होता है।

मुझे धर्म करना है।

जीवमें धर्म होता है।

शरीरमें धर्म नहीं होता।

मैं जीव हूँ, मुझमें धर्म होता है।

शरीर अजीव है, उसमें धर्म नहीं होता।

जीव एक द्रव्य है।

धर्म उसकी पर्याय है।

# ८. समझ

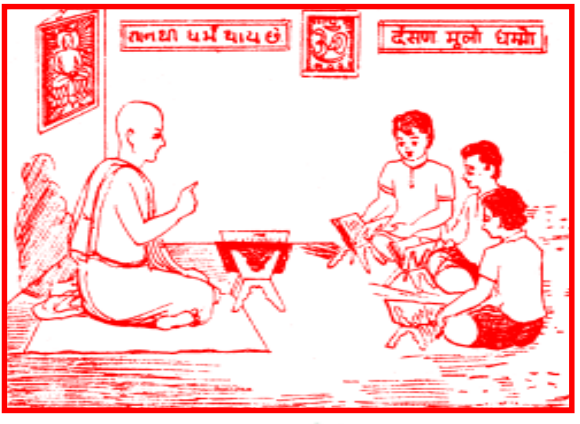


ज्ञान से धर्म होता है।

अज्ञान से अधर्म होता है।

जिसमें ज्ञान होता है वह धर्म को समझता है।

जीव में ज्ञान है। जीव धर्म को समझता है।

शरीर में ज्ञान नहीं है। शरीर धर्म नहीं समझता।

मैं जीव हूँ।

मुझ में ज्ञान है।

मैं अपने ज्ञान से धर्म को समझता हूँ।

*

# ९. भगवान

अरिहंत भगवान

सिद्ध भगवान

'णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं।'

धर्म अर्थात् आत्माकी समझ।

जो आत्माको समझता है वह भगवान होता है।

भगवान को पूरा ज्ञान होता है।

भगवान को तनिक भी राग नहीं होता।

भगवान सबको जानते हैं।

भगवान किसीका कुछ नहीं करते।

भगवानको भूख नहीं लगती।

भगवान कुछ नहीं खाते।

'अरिहंत' भगवान हैं। 'सिद्ध' भगवान हैं।

महावीर भगवान सिद्ध हैं।

सीमंधर भगवान अरिहंत हैं।

अरिहंतको शरीर होता है। सिद्धको शरीर नहीं होता।

प्रतिदिन भगवानके दर्शन करना चाहिए।

# १०. गुरु

'णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्वसाहूणं।'

इधर एक मुनि हैं। मुनि हमारे गुरु हैं।

वे आत्मा के ध्यान में बैठे हैं।

पास में कमण्डल और पीछी है।

सच्चे मुनि को आत्मज्ञान होता है।

कुन्दकुन्द मुनि आचार्य थे।

आचार्य भी मुनि हैं, उपाध्याय भी मुनि हैं, साधु भी मुनि हैं।

सब मुनि हमारे गुरु हैं।

गुरु हम को धर्म का उपदेश देते हैं।

सदा गुरु के दर्शन, विनय और भक्ति करना।

# ११. शास्त्र

यह समयसार है। वह एक शास्त्र है।

शास्त्र आत्माको समझाते हैं।

ज्ञानी जिसकी रचना करें वह शास्त्र है।

शास्त्र से आत्माकी पहिचान होती है।

शास्त्र में ज्ञान नहीं है। वह कुछ जानता नहीं है।

जीव में ज्ञान है। जीव सब कुछ जानता है।

समयसार-शास्त्र बहुत अच्छा है।

इससे आत्माका ज्ञान होता है।

कुन्दकुन्द-आचार्यने इसकी रचना की है।

सदा शास्त्रका दर्शन और स्वाध्याय करना चाहिए।

शास्त्रको जिनवाणी कहते हैं।

# जैन बालकका हालरिया (लोरी)

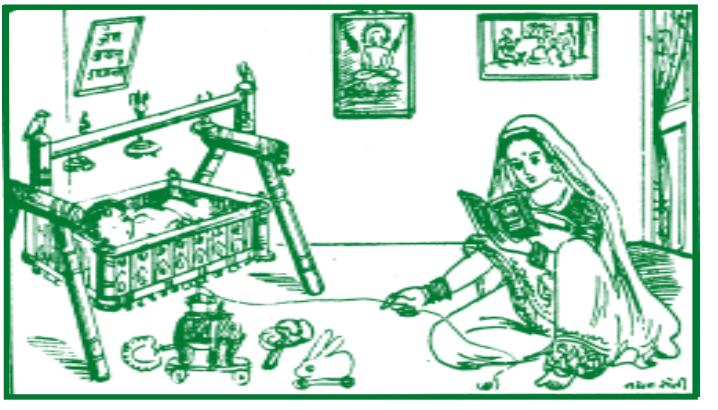

'अरिहंत' पिताजी तेरे, 'जिनवाणी' माता तेरी,
मेरे भैया ! 'अरिहंत' सहज है होना।

'प्रभु सिद्ध' पिताजी तेरे, 'जिनवाणी' माता तेरी,
मेरे भैया ! 'प्रभु सिद्ध' सहज है होना।

'आचार्य' पिताजी तेरे, 'जिनवाणी' माता तेरी,
मेरे भैया ! 'आचार्य' सहज है होना।

'उपाध्याय' पिताजी तेरे, 'जिनवाणी' माता तेरी,
मेरे भैया ! 'उपाध्याय' सहज है होना।

'मुनिराज' पिताजी तेरे, 'जिनवाणी' माता तेरी,
मेरे भैया ! 'मुनिराज' सहज है होना।

'जिनशासन' धर्म तुम्हारो, निज आतमको संभारो,
मेरे भैया ! 'जिनधर्म' सहज समझना।

# १३. सम्यग्दर्शन

सम्यग्दर्शन अर्थात् सच्ची श्रद्धा।
सच्ची श्रद्धा अर्थात् आत्मा का विश्वास।

अपना आत्मा पूरा है, अपना आत्मा भगवान है।
अपने आत्मा का विश्वास करे तो सम्यग्दर्शन होवे।

सम्यग्दर्शन हो तो अवश्य मोक्ष हो।
सम्यग्दर्शन धर्मका मूल है।

सम्यग्दर्शन प्रत्येक जीव के लिये बहुत आवश्यक है।
सम्यग्दर्शन के बिना ही जीव संसारमें भटकता है।
सम्यग्दर्शन के बिना कभी भी धर्म नहीं होता।
आत्मा की सच्ची श्रद्धा ही सब से पहला धर्म है।
आत्मा की झूठी श्रद्धा ही सब से बड़ा पाप है।

सब से पहले क्या करोगे?
'सम्यग्दर्शन का अभ्यास।'

# १४. सम्यग्ज्ञान

सम्यग्ज्ञान अर्थात् सच्ची समझ।
सच्ची समझ अर्थात् आत्माकी पहचान।
'आत्मा ज्ञानवाला है, आत्मा शरीर से अलग है,
जीवको राग होता है वह उसका गुण नहीं है।'
—ऐसा समझे तो सच्चा ज्ञान हो।

सच्चा ज्ञान हो तब झूठा ज्ञान हटे।
सच्चा ज्ञान हो तब सुख प्रगटे।
सच्चा ज्ञान को तब धर्म हो।
सच्चा ज्ञान हो तब संसार छूटे।
सच्चा ज्ञान हो तब आप भगवान हो।
सच्चा ज्ञान ही सबसे पहला धर्म है।
अज्ञान ही सबसे बड़ा पाप है।

तुम क्या करोगे ?

'आत्मा का सच्चा ज्ञान करेंगे; अज्ञान का नाश करेंगे।

# १५. सम्यक्चारित्र

सम्यक्चारित्र अर्थात् सच्चा आचरण !

आत्माको पहचानकर उसमें रहना सो सम्यक्चारित्र है। जो आत्माको पहचाने उसके ही सच्चा चारित्र होता है। जो आत्माको नहीं पहचाने उसके सच्चा चारित्र नहीं होता। सम्यक्चारित्र सम-भाव है। सम्यक्चारित्र शान्ति है। सम्यक्चारित्र धर्म है।

जिसके सम्यक्चारित्र हो उसे मुनि कहा जाता है। सम्यक्चारित्रसे शीघ्र मोक्ष होता है।

पहले सम्यक्चारित्र और सम्यग्ज्ञान, पीछे सम्यक्चारित्र। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र, तीनों मिलकर मोक्षका मार्ग है, और किसी तरहसे भी मोक्ष नहीं होता।

बालको ! तुम भी आत्माकी पहचान करके सम्यक्चारित्रकी भावना करो।

# १६. जैन

## जैन अर्थात् जीतने वाला

जैनधर्म अर्थात् आत्माका स्वभाव।
जो आत्माको पहचाने सो जैन कहलाये॥

आत्मा को पहचान कर जो अज्ञान को जीते सो जैन।
आत्माके वीतराग-भावसे जो राग-द्वेष को जीते सो जैन।
जिसने राग-द्वेषको दूर किया है वह जिनदेव है।
जिनदेव ही सच्चे भगवान हैं।

भगवान सर्वज्ञ हैं, भगवान वीतराग हैं।

जैन मांस नहीं खाते। जैन मधु (शहद) नहीं खाते।
जैन मदिरा नहीं पीते। जैन अण्डा नहीं खाते।

जैनधर्म अनेकांतवादी है।

*

# १७. राजाकी कहानी

एक था राजा। वह जंगलमें शिकार करने गया। जंगलमें एक मुनिराज थे। राजाने उनको नमस्कार किया।

मुनिराजने कहा–'हे राजन् ! शिकार करनेसे पाप होता है। पापसे जीव नरकमें जाता है; वहाँ वह बहुत दुःखी होता है।'

यह सुनकर राजा रो पड़ा; और मुनिराजसे पूछा–'प्रभो ! मेरा पाप कैसे दूर हो और मैं कैसे सुखी होऊँ ?'

मुनिराजने कहा–'हे राजन् ! सुख तेरे आत्मामें ही है। तू शिकार करना छोड़ दे और आत्माकी पहचान कर, इससे तू सुखी होगा।

इसके बाद राजाने शिकार करना छोड़ दिया और मुनिराजके पास रहकर आत्माकी पहचान की तथा सुखी हुआ। अन्तमें वह संसारसे छूटकर मोक्षमें गया।

बालको ! पाप छोड़ो, आत्माको समझो तो सुखी होओगे।

# १८. मुक्त और संसारी

जीव दो तरह के हैं—एक मुक्त और दूसरे संसारी।
मुक्त जीव शुद्ध हैं, संसारी जीव अशुद्ध हैं।
मुक्त जीव मोक्षमें रहते हैं, वे पूरे सुखी हैं।
उनके राग-द्वेष नहीं होते, उनके जन्म-मरण नहीं होते।
वे कभी संसारमें नहीं आते, वे दूसरोंका कुछ नहीं करते।

सिद्ध भगवान मुक्त जीव हैं।
अरिहंत भगवान भी जीवन्मुक्त हैं।

संसारी जीवोंको जन्म-मरण होते हैं।
स्वर्ग के जीव संसारी हैं, नरक के जीव संसारी हैं।
तिर्यंच के जीव संसारी हैं, मनुष्य के जीव भी संसारी हैं।
संसारी जीव दुःखी हैं; मुक्त जीव सुखी हैं।
आत्माको न पहिचाने तब तक जीव संसारमें रुलता है।
यदि आत्मा को पहिचाने तो अवश्य मुक्ति पाता है।

*

# १६. जीव और कर्म

कर्म

जीव

कर्म अजीव हैं।
कर्म में ज्ञान नहीं है।
जीव में ज्ञान है।
जीव और कर्म अलग अलग हैं।
जीव में कर्म नहीं है।
कर्म में जीव नहीं है।

जीव अज्ञान से हैरान होता है।
कर्म जीव को हैरान नहीं करते।
जीव अपनी भूलसे दुःखी होता है।
कर्म जीवको दुःखी नहीं करते।

जीवकी पहचान करना चाहिये।
कर्मका दोष नहीं निकालना चाहिये।
जीव को पहचानना धर्म है।
कर्म का दोष निकालना अधर्म है।

*

# २०. श्री महावीर भगवान

क्या तुम भगवान महावीर को पहिचानते हो? जैसे तुम आत्मा हो वैसे महावीर भगवान भी एक आत्मा है। उन्होंने आत्माकी पहिचान की और राग-द्वेष को दूर किया। इसीसे वे भगवान हुए। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम भी भगवान हो जाओगे।

'महावीर'के पिताजीका नाम सिद्धार्थ राजा और माताका नाम त्रिशलादेवी था। उनका जन्म चैत्र सुदी १३के दिन वैशालीके कुण्डलपुरमें हुआ था। जन्मसे ही वे महान आत्मज्ञानी और वैरागी थे। स्वर्गसे देव उनकी सेवा करने आते थे और छोटे बालकोंका रूप धारण कर उनके साथ खेलते थे।

खेलते हुए एक दिन एक देव ने बड़े सर्प का रूप बनाया और सब बालकोंको डराने लगा, किन्तु महावीरने उसे उठाकर दूर फेंक दिया।

फिर, एक बार राजा का हाथी पागल होकर भागा और लोगों को परेशान करने लगा, तब बालक महावीरने आकर उसे शान्त कर दिया।

*

राजकुमार महावीर जब बड़े हुए तब एक बार उनको अपने पूर्वभवका ज्ञान हुआ।

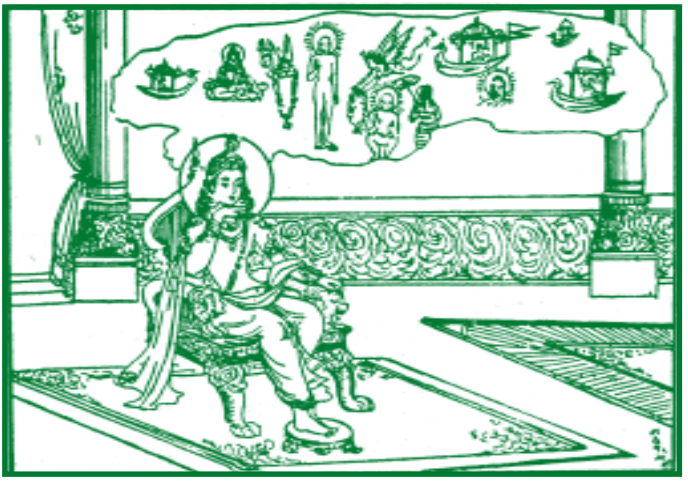

पूर्वभव का ज्ञान होते ही उनको बहुत वैराग्य जागृत हुआ जिससे वे दीक्षा लेकर मुनि हो गए।

उनको आत्माकी पहिचान तो थी ही। मुनि होने के बाद आत्माका ध्यान करने लगे। आत्मा के ध्यान से उनके ज्ञान की शुद्धता बढ़ने लगी और राग छूटने लगा। ऐसा करते करते सम्पूर्ण राग का नाश हो गया और पूर्ण ज्ञान प्रगट हुआ। इससे वे भगवान हुए, अरिहंत हुए।

इसके बाद उनका धर्मोपदेश होने लगा। उपदेश सुनने के लिए जीवोंके झुण्ड के झुण्ड आये। स्वर्ग के देव आये और बड़े बड़े राजा आये। आठ वर्ष के बालक भी आये और

उन्होंने आत्माको समझा। जंगल से सिंह आये, भालू आये, हाथी आये, बन्दर आये, बड़े बड़े सर्प आये और छोटे छोटे मेंढ़क भी आये। और उन्होंने आत्माको समझा।

महावीर भगवानने बहुत वर्षों तक धर्म का उपदेश देकर जैनधर्म का बहुत प्रसार किया। अन्तमें वे पावापुरी से मोक्ष पधारे। पहले वे अरिहन्त थे। अब सिद्ध हो गये।

कार्तिक कृष्णा अमावस के प्रातःकाल में वे मोक्ष पधारे। अतः उस दिन सर्वत्र दीपावली महोत्सव मनाया जाता है।

इस समय महावीर भगवान मोक्ष में बिराजमान हैं, वहाँ वे पूर्ण आनन्द में हैं।

बालकों ! महावीर भगवान की तरह तुम भी आत्मा को पहिचानो, राग-द्वेष को त्यागो और मोक्ष को प्राप्त करो।

# २१. इतना करना

बालको ! सबेरे जल्दी उठना।
उठकर आत्माका विचार करना।
प्रभुका स्मरण करना और नमस्कार मंत्र बोलना।
फिर स्वच्छ वस्त्र पहिनकर जिनमंदिर जाना।
जिनमंदिर जाकर भगवान के दर्शन करना।
इसके बाद शास्त्रजी को वंदन करना,
और उनका पठन करना।
फिर गुरुजी के दर्शन करना, उनका उपदेश सुनना,
और सुनकर विचार करना।
हर रोज इतना करना।
ऐसा करने से तुम्हारा जीवन पवित्र होगा।

# २२. अच्छी अच्छी शिक्षायें

(१) आत्मदेव को कभी न भूलना,
हिंसा कभी नहीं करना।।

(२) सिद्ध प्रभुको कभी न भूलना,
झूठी बात कभी नहीं करना।।

(३) गुरुकी स्तुति करना न भूलना,
चोरी कभी नहीं करना।।

(४) शास्त्र जहाँ तहाँ कभी न रखना,
रात्रिभोजन कभी न करना।।

(५) सदा शान्त, सन्तोषी रहना,
ममता कभी नहीं करना।।

(६) इन बातों को जरूर मानना,
इतना तू अवश्य करना।।

# २३. कभी.....नहीं

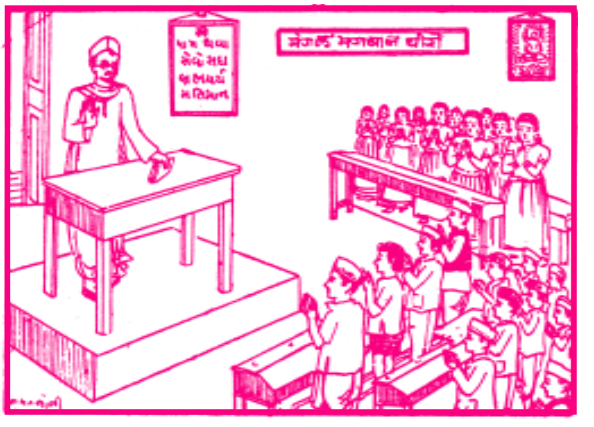

कभी धर्म छोड़ना नहीं।
कभी क्रोध करना नहीं।
कभी हठ करना नहीं।
कभी कपट करना नहीं।
कभी लालच करना नहीं।
कभी दया छोड़ना नहीं।
कभी भय करना नहीं।
कभी प्रमाद करना नहीं।
कभी जुआ खेलना नहीं।
कभी अन्याय करना नहीं।
कभी निंदा करना नहीं।
कभी दोष छिपाना नहीं।

# २४. धून

(१) सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी, अविनाशी में आत्मस्वरूप।।

(२) हम है जिनवरकी संतान, सदा करेंगे आतमज्ञान।।

(३) देव हमारे श्री अरिहंत, गुरु हमारे निर्ग्रन्थ सन्त।।

(४) अरिहंतकी जय..... जिनवाणीकी जय।
गुरुदेवकी जय.... जिनधर्मकी जय।

(५) देह मरे भले, मैं नहीं मरता,
अजर–अमर मैं आत्मस्वरूप।।

(६) 'आतम–भावना करते करते होता केवलज्ञान रे।'

*

# २५. वंदन

(१) वंदन हमारा प्रभुजी तुम को।
वंदन हमारा गुरुजी तुम को॥ वंदन०॥

(२) वंदन हमारा सिद्ध प्रभु को।
वंदन हमारा अरिहंत देव को॥ वंदन०॥

(३) वंदन हमारा साधु भगवंत को।
वंदन हमारा धर्म-शास्त्र को॥ वंदन०॥

(४) वंदन हमारा सभी ज्ञानी को।
वंदन हमारा चैतन्य-देव को॥ वंदन०॥

(५) वंदन हमारा आत्म-स्वभाव को।
वंदन हमारा आत्म-प्रभु को॥ वंदन०॥

*

# २६. आत्मदेव

(१) मुझे देखना आतमदेव कैसा है?
देव कैसा है, क्या करता है? मुझे देखना०॥

(२) वही देवाधिदेव, वही भगवान जो,
वही परमेश्वर कैसा है? मुझे देखना०॥

(३) जाने सभी विश्व, झलके सभी जहाँ,
दर्पण समान देव कैसा है? मुझे देखना०॥

(४) न्यारा है विश्वसे, न्यारा है देह से,
आनन्द से एकमेक कैसा है? मुझे देखना०॥

(५) जन्मे मरे नहीं, राजा या रंक नहीं,
सागर आनन्द का कैसा है? मुझे देखना०॥

(६) आँखों दिखे नहीं, कानों सुनू नहीं,
ज्ञान में समाय, वह कैसा है? मुझे देखना०॥

*

# २७. मुझे बताओ

(१) मुझे बताओ, आत्मा कैसा है?
वह कैसा है, कहाँ रहता है? मुझे०॥

(२) जो जाने सभी को, देखे सभी को,
ऐसा वह आत्मा कैसा है? मुझे०॥

(३) आप ही प्रभु है, आप ही सिद्ध है,
आप ही ज्ञान का दरिया है॥ मुझे०॥

(४) भिन्न शरीर से, भिन्न वचनसे,
तो भी आनन्द से भरिया है॥ मुझे०॥

(५) जन्म बिना का, मरण बिना का,
वह राग बिना का, कैसा है? मुझे०॥

(६) जो दिखे न आँखसे, दिखे जो ज्ञानसे,
मुझे मेरे जीव को देखना है॥ मुझे०॥

*

# २८. मेरी भावना

(१) मुझे प्रभु का दर्शन करना है।
मुझे आत्मा का दर्शन करना है॥ मुझे० ॥

(२) मुझे ज्ञानी की सेवा करनी है।
मुझे समझ सच्ची करनी है॥ मुझे० ॥

(३) मुझे पठन शास्त्र का करना है।
मुझे मोह—अँधेरा हरना है॥ मुझे० ॥

(४) मुझे वैराग्य सच्चा करना है।
मुझे संग मुनि का करना है॥ मुझे० ॥

(५) मुझे संसार से पार होना है।
मुझे झटपट मोक्ष में जाना है॥ मुझे० ॥

*

# जैन बालपोथीके प्रश्न

बालको, तुमने यह जैन बालपोथी पढ़ ली है; अब नीचे दिये हुए प्रश्नोंके उत्तर ढूँढ़ो। इससे तुम्हारा अभ्यास पक्का होगा और तुम्हें आनन्द आयेगा। यह प्रश्न परीक्षामें तथा बालकोंको एक-दूसरेके साथ प्रश्नोत्तर करनेमें उपयोगी होंगे।

१. मैं कौन हूँ?
२. मुझमें क्या है?
३. हम किसकी सन्तान हैं?
४. तुम्हें क्या पढ़ना अच्छा लगता है?
५. तुम बड़े होकर क्या करोगे?
६. तुम जीव हो या शरीर?
७. ज्ञान जीवमें होता है या शरीरमें?
८. जीव और शरीरमें क्या अन्तर है?
९. जीव और शरीर एक हैं या भिन्न?
१०. तुम काहेसे जानते हो?
११. आँखके बिना देखा जा सकता है क्या?
१२. शरीर किसको जानता है?
१३. तुम कौनसा द्रव्य हो?—जीव या अजीव?
१४. तुममें कौनसा गुण है?
१५. जानना वह किसकी पर्याय है?
१६. जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य दोनोंमें क्या अन्तर है?
१७. शरीर कौन है?
१८. तुम कौन हो?

१९. क्या जीव शरीरके काम करता है?
२०. क्या जीव शरीरको जानता है?
२१. क्या शरीरमें ज्ञान होता है?
२२. सुखी होनेके लिये तुम क्या करोगे?
२३. धर्म करनेसे क्या होता है?
२४. आत्माको पहिचाने बिना सुख होता है या नहीं?
२५. पैसेसे सुख मिलता है या नहीं?
२६. धर्म न करे तो जीवको क्या हो?
२७. धर्म जीवमें होता है या शरीरमें?
२८. धर्म वह द्रव्य है या पर्याय?
२९. धर्म किसकी पर्याय है?
३०. तुम किस प्रकार धर्म करोगे?
३१. धर्म किसमें होता है?
३२. धर्म किससे होता है?
३३. धर्म किसे कहते हैं?
३४. भगवान होना हो तो क्या करना?
३५. भगवानको क्या होता है? और क्या नहीं होता?
३६. क्या भगवान कुछ खाते हैं?
३७. अरिहंत और सिद्धमें क्या अन्तर है?
३८. महावीर भगवान इस समय सिद्ध हैं या अरिहंत?
३९. इस समय जो अरिहंत हो ऐसे भगवानका क्या नाम है?
४०. नमस्कार-मन्त्र शुद्ध तथा सुन्दर अक्षरोंमें लिखो ।
४१. जंगलमें कौन ध्यानमें बैठे हैं?
४२. अपने गुरु कौन हैं?

४३. गुरुके पाठमें एक आचार्यका नाम लिखा है वे कौन हैं?
४४. एक महान शास्त्रका नाम लिखो?
४५. शास्त्र हमें क्या समझाते हैं?
४६. ज्ञान शास्त्रमें होता है या जीवमें?
४७. तुमने कभी समयसार शास्त्रको हाथमें लेकर देखा है?
४८. शास्त्र किसे कहते हैं?
४९. समयसार-शास्त्रकी रचना किसने की?
५०. एक माता अपने बालकके लिये कैसी लोरी गाती है?
५१. अपनी धार्मिक माता कौन है?
५२. आत्माकी सच्ची श्रद्धाको क्या कहते हैं?
५३. सम्यग्दर्शन हो उसे क्या मिलता है?
५४. धर्मका मूल क्या है?
५५. जीव संसारमें क्यों भटक रहा है?
५६. सबसे पहला धर्म कौनसा?
५७. सबसे बड़ा पाप क्या?
५८. सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं?
५९. सम्यग्ज्ञानसे अपना आत्मा कैसा समझमें आता है?
६०. जिसे सच्चा चारित्र हो उसे क्या कहते हैं?
६१. कौनसी तीन वस्तुओंकी एकतासे मोक्षमार्ग होता है?
६२. आत्माको पहिचाने बिना मोक्ष होता है कि नहीं?
६३. सच्चा चारित्र और मुनिदशा किसे हो सकती है?
६४. जैन किसे कहते हैं?
६५. जिसने राग-द्वेषको दूर कर दिया उसे क्या कहते हैं?
६६. जिनदेव कैसे हैं?

६७. एक था राजा; वह किसलिये रो पड़ा ?
६८. सुखी होनेके लिये मुनिने राजाको क्या उपाय बतलाया ?
६९. जीव दो प्रकारके हैं—वे कौन-कौनसे ?
७०. स्वर्गके जीव संसारी हैं या मुक्त ?
७१. जीव कब तक संसारमें भटकता है ?
७२. मुक्त होनेके लिये जीवको क्या करना चाहिये ?
७३. कर्म जीव है या अजीव ?
७४. क्या जीवमें कर्म है ?
७५. जीव किससे दुःखी होता है ?—अज्ञानसे या कर्मसे ?
७६. महावीरने क्या किया कि जिससे वे भगवान हुये ?
७७. महावीर भगवानका जन्म-दिन कौनसा है ? और उनकी माताजीका नाम क्या ?
७८. पूर्वभवका ज्ञान होने पर भगवानने क्या किया ?
७९. मुनि होनेके बाद भगवान क्या करते थे ?
८०. भगवानका उपदेश सुननेके लिये कौन-कौन आया ?
८१. महावीर भगवान कहाँसे मोक्ष गये ?
८२. इस समय महावीर भगवान अरिहंत हैं या सिद्ध ?
८३. वे इस समय कहाँ रहते होंगे ?
८४. सुबेरे जल्दी उठकर तुम क्या करोगे ?
८५. अपनेको प्रतिदिन क्या-क्या करना चाहिये ?
८६. एक माता अपने बालकको अच्छी-अच्छी शिक्षाएँ देती है, उनमें सबसे पहले क्या कहती है ?
८७. क्या हम जैन लोग रात्रिभोजन करेंगे ?
८८. तुम प्रतिदिन क्या करोगे ?
८९. तुम कभी क्या नहीं करोगे ?

९०. आत्म-भावना भानेसे क्या मिलता है?
९१. 'सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी अविनाशी'–यह कौन है?
९२. हमारे देव कौन हैं?
९३. देह और जीवमें अमर कौन है?
९४. ''वंदन हमारा''...में तुम किस–किसको वंदन करते हो?
९५. आत्मदेव कैसा है? (पाठ–२६ की कविता)
९६. एक बालक क्या देखना चाहता है?
९७. आत्मा आँखसे दिखायी देता है या नहीं?
९८. आत्मा किससे दिखायी देता है?
९९. जन्म बिनाका, मरण बिनाका.....(आगे क्या है?)
१००. आप ही प्रभु है, आप ही सिद्ध.....(पूर्ण कीजिये)
१०१. तुम्हें किसका दर्शन करना है?
१०२. तुम्हें किसकी सेवा करनी है?
१०३. तुम्हें क्या करना अच्छा लगता है?
१०४. तुम्हें किससे छूटना है?
१०५. तुम्हें झट–झट कहाँ जाना है?
१०६. तुम प्रतिदिन धर्मका अध्ययन करते हो या नहीं?
१०७. तुम्हारी माता तुम्हें धर्मकी कहानियाँ सुनाती हैं या नहीं?
१०८. तुम प्रतिदिन भगवानका दर्शन करते हो या नहीं?
१०९. 'वीर प्रभुकी हम संतान'—यह गीत तुम्हें आता है?
११०. पंचरंगी जैन ध्वजका चित्र बनाओ! (पाठ–१६)
१११. क्या अब इस बालपोथीका दूसरा भाग भी तुम पढ़ोगे?

॥ जय जिनेन्द्र ॥

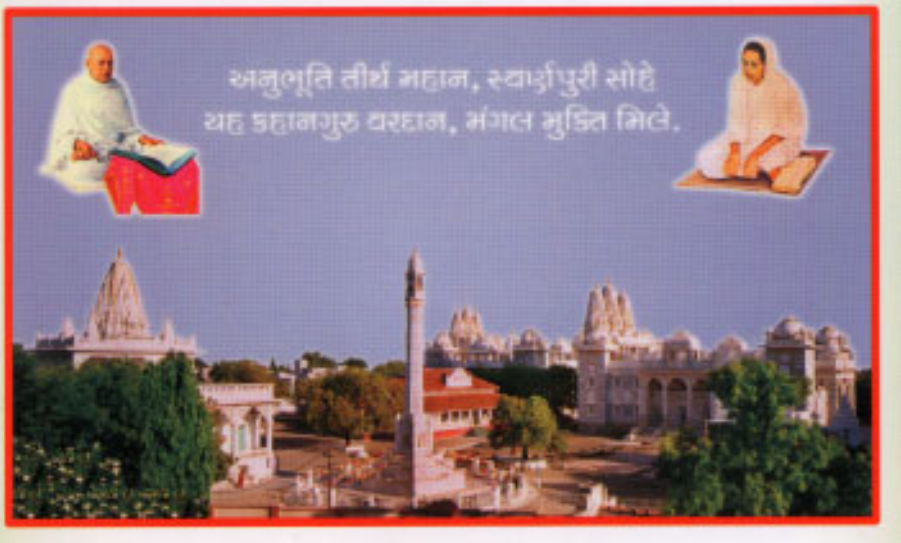
अनुभूति तीर्थ महान, स्वर्गापुरी सोहे
यह कृपागुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले.